ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 36 कुल पृष्ठ-8 16 से 22 सितम्बर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 भा.शु.-10

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि समारोह पूर्वक सम्पन्न

स्वामी अग्निवेश जी ने विश्व स्तर पर आर्य समाज को नई पहचान दी

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

स्वामी अग्निवेश जी व्यवस्था परिवर्तन में विश्वास रखते थे

– चौ. वीरेन्द्र सिंह

गरीब, मजदूर एवं महिलाओं के हक की लड़ाई लड़ते थे स्वामी अग्निवेश

– स्वामी आर्यवेश

वसुधैव कुटुम्बकम् एवं शांति के पक्षधर थे स्वामी अग्निवेश

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी, बंधुआ मजदूरों के मसीहा, दबे, कुचले लोगों की आवाज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि दिनांक 11 सितम्बर, 2021 (शनिवार) को कांस्टीट्यूशन क्लब, डिप्टी स्पीकर हाल, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–1 में सम्पन्न हुई।

इस प्रेरणा सभा के अध्यक्ष रहे प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने स्वामी अग्निवेश जी को इतिहास पुरुष की संज्ञा देते हुए उनके साथ अपने संस्मरणों को संक्षिप्त में सुनाते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने भरी जवानी में अपनी प्रोफेसर की नौकरी को ठोकर मारकर स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी मानव मात्र के कल्याण तथा समस्त जीव–जन्तुओं की रक्षा के लिए हमेशा कार्य करते रहे। उन्होंने सही मायने में महर्षि दयानन्द सरस्वती के पद्चिन्हों पर चलकर आर्य समाज को विश्व में सम्मान दिलाया।

इस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ. वीरेन्द्र सिंह जी ने स्वामी अग्निवेश जी के साथ अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी थे। चौधरी साहब ने बताया कि एक बार जब वे हरियाणा में शिक्षामंत्री थे तब मैं उनके पास एक अध्यापक के ट्रांसफर के लिए एक पत्र लेकर गया तो उन्होंने वह पत्र लेकर कागजों में रखते हुए कहा कि वीरेन्द्र जी हम सबको मिलकर शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन करने के बारे में कार्य करना चाहिए जिससे समाज का हित हो सके। स्वामी अग्निवेश जी व्यवस्था परिवर्तन में विश्वास करते थे जिससे समाज का उपकार किया जा सके। आज हमें उनके विचारों की बार–बार याद आती है कि वे कितने दूरदर्शी थे। उनकी सोच और विचारधारा व्यापक थी जिससे आज हम सबको प्रेरणा लेने की जरूरत है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी अग्निवेश जी के संस्मरणों को संक्षिप्त में बताते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी का समस्त जीवन सामाजिक न्याय, आर्थिक एवं सामाजिक समानता के सक्रिय साधक के रूप में बीता जो पिछले 50 वर्षों से अधिक समय से मानव अधिकार एवं सामाजिक न्याय के अभियानों के अंग रहे। स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव मात्र में भ्रातृभाव जगाने तथा सामाजिक समता को विकसित करने में लगा दिया। उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, आर्थिक शोषण, धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ, जातिवाद, साम्प्रदायिकता जैसे मुद्दों को उठाकर जन–जागरण पैदा किया। ये वे मुद्दे थे जो राष्ट्र की उन्नति और समृद्धि को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहे थे। स्वामी जी ने कन्या भ्रूण हत्या का मुद्दा उठाया जो आज सारे देश में जागृति पैदा कर रहा है। स्वामी अग्निवेश जी ने अपने अनुकरणीय तथा प्रशंसनीय कार्यों के माध्यम से विश्व मंच में अपनी प्रतिभा तथा कार्यों का लोहा मनवाया। स्वामी जी को शान्ति तथा स्वतंत्रता के उद्वाहक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के एक प्रकल्प (समकालीन दासता विरोधी ट्रस्ट फण्ड) का स्वामी जी को 9 वर्ष तक अध्यक्ष चुना गया। इस ट्रस्ट फण्ड के माध्यम से स्वामी जी ने दुनिया के विभिन्न देशों में चल रही दासता, बंधुआ मजदूरी व शोषण को समाप्त करने के लिए करोड़ों रुपये का सहयोग वहाँ के जन संगठनों को और दासता की बेड़ियों में जकड़े शोषित, वंचित, पीड़ित लोगों को उपलब्ध कराया। ऐसे विश्व स्तरीय संस्थान का लगातार सर्वसम्मति से 9 वर्ष तक अध्यक्ष बने रहना वास्तव में स्वामी अग्निवेश जी के सेवा कार्यों तथा चमत्कारी व्यक्तित्व को दर्शाता है। वे निवानो शांति पुरस्कार समिति टोकियो के सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय शांति परिषद् के सदस्य सहित अनेकों संगठनों तथा संस्थाओं का कुशल संचालन किया था।

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

हिन्दी में हस्ताक्षर से क्यों न करें शुरुआत

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

हर 14 सितंबर को भारत में हिंदी–दिवस मनाया जाता है। वह एक सरकारी औपचारिकता बनकर रह जाता है। यदि भारत की विभिन्न सरकारों और जनता को सचमुच स्वभाषा का महत्त्व पता होता तो हिंदी की वह दुर्दशा नहीं होती, जो आज भारत में है। आज तक दुनिया का कोई भी देश यदि महाशक्तिशाली और महासंपन्न बना है तो वह स्वभाषा के माध्यम से बना है। सुरक्षा परिषद् के पांचों स्थायी सदस्य अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन अपने देश की शिक्षा, चिकित्सा, संसद, सरकार, अदालतों और अपने दैनंदिन व्यवहार में उच्चतम स्तर तक स्वभाषा का ही प्रयोग करते हैं। मैं इन सभी देशों और जापान आदि में भी रहा हूं। मैंने उनके उच्चतम स्तरों तक पर कभी किसी विदेशी भाषा का प्रयोग होते नहीं देखा है।

इसका अर्थ यह नहीं कि विदेशी भाषाओं का प्रयोग और उपयोग करना सर्वथा अनुचित है। कदापि नहीं। विदेशी भाषाओं का उपयोग अनुसंधान, कूटनीति, विदेश–व्यापार आदि के लिए हम करें और जमकर करें, यह जरुरी है लेकिन हम किसी एक विदेशी भाषा को अपनी मालकिन बना लें और अपनी भाषाओं को उसकी नौकरानी बना दें तो मानकर चलिए कि हमने अपने राष्ट्र के पांवों में बेड़ियां डाल दी हैं। वह 75 साल तो क्या, 100 साल में भी महाशक्ति और महासंपन्न नहीं बन पाएगा लेकिन यदि आज भी भारत की जनता और सरकार संकल्प कर ले कि राष्ट्र–जीवन के हर क्षेत्र में हम स्वभाषा और राष्ट्रभाषा को प्राथमिकता देंगे तो निश्चय ही भारत 21वीं सदी को एशिया की सदी बना सकता है।

हिन्दी–दिवस के अवसर पर भारत के सभी विभिन्न भाषाभाषी नागरिकों को यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए कि हिंदी किसी पर थोपी नहीं जाएगी। समस्त भारतीय भाषाओं को सामान आदर प्राप्त होगा। अब हमारी संसद और सर्वोच्च न्यायालय में कई अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग होने भी लगा है। हिंदी–दिवस पर भारत की जनता और सरकार, दोनों को कुछ ठोस संकल्प लेने चाहिए।

भारत के सभी नागरिक यह संकल्प ले सकते हैं कि वे अपने हस्ताक्षर अपनी मातृभाषा या हिंदी में ही करेंगे। वे अंग्रेजी या किसी भी विदेशी भाषा में हस्ताक्षर नहीं करेंगे। देश के ज्यादातर पढ़े–लिखे लोग अपने दस्तखत अंग्रेजी में ही करते हैं। आपके हस्ताक्षर आपकी पहचान हैं। उनका महत्व अद्वितीय है। आप अपने बैंक में खुद जाकर रूपया निकालें तो वहां आपको नहीं निकालने दिया जाएगा लेकिन आपकी जगह आपका हस्ताक्षर किया हुआ चेक जाएगा तो उसे देखकर रूपया तुरंत मिलेगा। दुनिया का कोई भी राष्ट्र आपके हिंदी हस्ताक्षर को स्वीकार करने से मना नहीं कर सकता। पिछले 50 साल में लगभग 80 देशों में जाकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं। मैंने किसी भी दस्तावेज पर आज तक अंग्रेजी में दस्तखत नहीं किए हैं। यदि देश के करोड़ों लोग यह संकल्प कर लें तो फिर यह स्वभाषा को चेतना उनके अन्य कामों में भी अपना असर दिखाएगी।

विभिन्न शहरों के बाजारों में लगे नामपट्ट यदि हिंदी और स्थानीय भाषाओं में लगे हों तो खरीदारों को ज्यादा आसानी होगी। माल ज्यादा बिकेगा। कुछ प्रांतों ने स्थानीय भाषा के इस प्रावधान को कानूनी रूप भी दिया है। सारे देश के बाजारों के लिए इस तरह के नियम क्यों नहीं लागू किए जा सकते हैं ? आम लोगों को चाहिए कि वे अपने परिचय–पत्र भी भारतीय भाषाओं में छपवाएं। अपने निमंत्रण–पत्र भी अपनी स्थानीय भाषा और हिंदी में क्यों नहीं छपवाए जा सकते हैं? अब से लगभग 50 साल पहले जब यह स्वभाषा आंदोलन तेजी से चला था तो सैकड़ों लोग ऐसे भी थे, जो अंग्रेजी में निमंत्रणों के कार्यक्रमों का बहिष्कार कर देते थे।

आजकल हमारी बोलचाल में, अखबारों और टीवी चैनलों में अंग्रेजी शब्दों और मुहावरों का प्रयोग भी बहुत ज्यादा बढ़ गया है। कई बार तो उस बोले और

लिखे हुए का अर्थ निकालना मुश्किल हो जाता है। भाषा अलग भ्रष्ट होती है। संवाद का सौंदर्य नष्ट हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों को पचा लेने की क्षमता को खो दें। हिंदी तो बनी है अत्यंत समर्थ भाषा इसीलिए कि इसने सैकड़ों देशी और विदेशी भाषाओं और बोलियों के शब्दों को पचा लिया है। उसका शब्द सामर्थ्य और अभिव्यक्ति की क्षमता अंग्रेजी के मुकाबले कई गुना ज्यादा है। वह संस्कृत की पुत्री और भारतीय भाषाओं की भगिनी है।

हिंदी–दिवस पर भारत की जनता यह संकल्प भी ले कि वह हिंदी को नौकरशाही के शिकंजे से मुक्त करेगी। आज भी देश का शासन हमारे नेता कम और नौकरशाह ज्यादा चलाते हैं। वे आज तक अंग्रेजी काल की गुलाम मानसिकता से मुक्त नहीं हुए हैं। यदि हमारे नेता दृढ़ संकल्पी हों तो भारत में से अंग्रेजी का वर्चस्व वैसे ही चुटकियों में खत्म हो सकता है, जैसे व्लादिमीर लेनिन ने रूस में फ्रांसीसी और तुर्की में अतातुर्क ने अरबी लिपि का किया था। यदि सारे सरकारी काम–काज से अंग्रेजी को हटा दिया जाए तो समस्त भारतीय भाषाएं और हिंदी अपने आप जम जाएगी। बस, सावधानी यही रखनी होगी कि किसी अहिंदीभाषी को कोई असुविधा न हो।

यदि भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय की तरह एक अनुवाद मंत्रालय भी कायम कर दे तो बहुभाषी भारत में यह एक चमत्कारी काम होगा। भारत के किसी भी नागरिक को स्वभाषा का प्रयोग करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। संसद और विधानसभा के कानून स्वभाषाओं में बनने शुरु हो जाएंगे, अदालतों के फैसले और बहसें जनता की भाषा में होंगी, विश्वविद्यालयों की ऊँची पढ़ाई और शोधकार्य भी भारतीय भाषाओं में होने लगेंगे। सारे स्कूलों और कॉलेजों से अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई पर प्रतिबंध होगा। कोई भी विषय अंग्रेजी माध्यम की बजाय भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ाया जा सकेगा। विभिन्न विषयों की पुस्तकें और ताजा शोध–लेख, जो विदेशी भाषाओं में होंगे, वे भारतीय छात्रों को उनकी सहज और सरल भाषा में मिलने लगेंगे। विदेशी भाषा को रटने और समझने में जो शक्ति फिजूल खर्च होती है, उसका उपयोग छात्रों की मौलिकता बढ़ाने में होगा। छात्रों को सिर्फ अंग्रेजी नहीं, कई विदेशी भाषाएँ पढ़ने की स्वैच्छिक सुविधा भी दी जाए ताकि हमारे विदेश व्यापार, कूटनीति और शोधकार्य में नई जान फुंक जाए।

यदि हम भारत की संसद, सरकार, अदालतों, शिक्षा, चिकित्सा और जन–जीवन में हिंदी और स्वभाषाओं को उनका उचित स्थान दिलवा सकें तो फिर उसे संयुक्तराष्ट्र संघ में भी प्रतिष्ठित करवा सकते हैं लेकिन घर में जो नौकरानी बनी हुई है, उसे आप बाहर महारानी बनाने की कोशिश करेंगे तो क्या लोग आप पर हंसेंगे नहीं? यदि सरकारी नौकरियों से अंग्रेजी की अनिवार्यता हट जाए तो देश के करोड़ों गरीबों, पिछड़ों, ग्रामीणों को आगे आने के अपूर्व अवसर मिल सकेंगे। भारत को समतामूल राष्ट्र बनाने में भारी मदद मिलेगी। लोकभाषा के बिना लोकतंत्र की कल्पना भी अधूरी है।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771

स्वामी अग्निवेश जी की संक्षिप्त जीवन यात्रा

– स्वामी आदित्यवेश

समाज के दबे, कुचले व अन्तिम व्यक्ति की लड़ाई लड़ने वाले, हजारों बंधुआ मजदूरों को नव जीवन देने वाले, वरिष्ठ मानवाधिकार कार्यकर्ता, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का जन्म 21 सितम्बर, 1939 को आन्ध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम में हुआ। उनका बचपन नाना के घर बीता जो शक्ति (छत्तीसगढ़) स्टेट के दीवान थे। उनकी उच्च शिक्षा की पढ़ाई कलकत्ता में हुई। वहीं पर बाद में वकालत की तथा सेंट जेवियर्स कॉलेज में विजनेस मैनेजमेंट के प्रोफेसर रहे। 1966 में हरियाणा के झज्जर गुरुकुल में ब्र. इन्द्रदेव (बाद में स्वामी इन्द्रवेश बने) से विचार–विमर्श करके 7 अप्रैल, 1970 को दयानन्द मठ रोहतक में संन्यास लेकर प्रो. श्यामराव से स्वामी अग्निवेश तथा ब्र. इन्द्रदेव जी स्वामी इन्द्रवेश बन गये। उसी दिन अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत भी की। उसके बाद कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। लगभग आधी शताब्दी उन्होंने वैदिक मान्यताओं के प्रचार–प्रसार में लगा दी। बंधुआ मजदूरी, नारी उत्पीड़न, अन्धविश्वास, पाखण्ड, नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता तथा भ्रष्टाचार आदि मुद्दों पर स्वामी अग्निवेश जी ने आजीवन संघर्ष किया। आम आदमी के हक एवं अधिकारों के लिए जहां उन्होंने संघर्ष किया वहीं सामाजिक समरसता व साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए प्रयासरत रहे।

स्वामी अग्निवेश जी ने अपने साहसिक कार्यों से देश–विदेश में पहचान बनाई तथा आन्दोलनों के माध्यम से कानून बनवाकर सामाजिक क्षेत्र में एक नये अध्याय का सूत्रपात किया।

हालांकि अपने सामाजिक जीवन के आन्दोलनों में जहाँ उन्हें सरकारों की लाठियां खानी पड़ी वहीं समाज के संकीर्ण एवं बीमार मानसिकता का शिकार भी होना पड़ा। पाकुड़ (झारखण्ड) के एक आदिवासी सम्मेलन में जाते समय एक साम्प्रदायिक संगठन व विचारधारा विशेष के लोगों ने उन पर हमला किया। उसी हमले में उनका लीवर क्षतिग्रस्त हुआ। जो बहुत प्रयास करने के बाद भी ठीक नहीं हो सका और 11 सितम्बर, 2020 को दिल्ली के आई.एल.बी.एस. अस्पताल में 81 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

भले ही आज स्वामी अग्निवेश जी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके विचार, उनके आन्दोलन, उनके कार्य आने वाली सदियों तक समाज का मार्गदर्शन करते रहेंगे। जब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना तथा पाखण्ड के विरोध के लिए याद किया जायेगा, अब्राहम लिंकन को दासता विरोधी आन्दोलन के लिए याद किया जायेगा, महात्मा गांधी जी को सत्य के प्रति आग्रह के लिए याद किया जायेगा, किसानों को गुलामी से मुक्ति दिलवाने के लिए चौधरी छोटूराम जी को याद किया जायेगा तब तक स्वामी अग्निवेश जी को भी बंधुआ मुक्ति एवं मानव अधिकारों के प्रबल प्रवत के रूप में याद किया जायेगा।

स्वामी अग्निवेश एवं सामाजिक आन्दोलन

1966 में गुरुकुल झज्जर में आगमन। सन् 1967 में ब्र. इन्द्रदेव मेधार्थी (स्वामी इन्द्रवेश) से मिलकर पूरा जीवन समाज के लिए लगाने का निर्णय। 1968 में युवक क्रांति अभियान का सूत्रपात। सन् 1968 में ही आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का गठन। सन् 1968 से 'राजधर्म' साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया बाद में राजधर्म दैनिक भी प्रकाशित हुआ। सन् 1968 में ही कुरुक्षेत्र से दिल्ली की ऐतिहासिक पदयात्रा के माध्यम से नशाबन्दी आन्दोलन का आगाज। सन् 1969 में चण्डीगढ़ आन्दोलन के दौरान पुलिस द्वारा लाठियों से प्रहार तथा जेल गए। सन् 1969 में ही कुण्डली का बूचड़खाना तोड़ा। 7 अप्रैल, 1970 को दयानन्द मठ रोहतक में संन्यास दीक्षा तथा राजनैतिक पार्टी 'आर्य सभा' का गठन। सन् 1973 में किसान आन्दोलन की शुरुआत, जेल गए व निरन्तर संघर्ष किया। स्वामी इन्द्रवेश जी ने संगठन की ओर से आमरण अंनशन कर गेंहूँ का लाभकारी मूल्य देने की माँग की। परिणाम स्वरूप गेंहूं का भाव 76 रुपये से 105 रुपये हुआ। किसान आन्दोलन के दौरान अम्बाला व रोहतक की जेल में भी रहे। जय प्रकाश आन्दोलन में स्वामी इन्द्रवेश जी को आन्दोलन का मुख्य संयोजक बनाया गया। स्वामी अग्निवेश जी ने भी इस आन्दोलन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1973 में ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लगभग 200 शिक्षण संस्थाओं पर प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) बने। आपातकाल के दौरान जालन्धर में गिरफ्तार हुए तथा रोहतक एवं अम्बाला जेल में रहे। जे. पी. आन्दोलन में दोबारा गिरफ्तार होकर 14 महीने अम्बाला की जेल में रहे। सन् 1977 में जनता पार्टी से चुनाव लड़ा व पूण्डरी से विधायक बने। सन् 1977 में ही शिक्षा बोर्ड हरियाणा के चेयरमैन बने। बाद में हरियाणा सरकार में शिक्षामंत्री बने। फरीदाबाद में मजदूरों पर गोली चलाए जाने के विरोध में शिक्षामंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। सन् 1979 में 'बंधुआ मुक्ति मोर्चा' बनाकर मजदूरों के हकों की लड़ाई प्रारम्भ की। भारत में मजदूरों के लिए पहली बार मजबूत कानून आन्दोलन के दम पर बनवाया। केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी तब स्वामी अग्निवेश जी को जन–आन्दोलन समिति का अध्यक्ष बनाया गया जिसमें प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई, जनता पार्टी अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर, केन्द्रीय मंत्री श्री मोहन धारिया, केन्द्रीय मंत्री श्री रामकृष्ण हेगड़े, केन्द्रीय मंत्री श्री जार्ज फर्नाडीज, समाजवादी नेता श्री सुरेन्द्र मोहन आदि बड़े राष्ट्रीय नेता सदस्य बने। सन् 1983 में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का आयोजन रामलीला मैदान, नई दिल्ली में स्वामी अग्निवेश जी के संयोजन में किया गया। सन् 1984–1985 में जब पूरा पंजाब आतंकवाद

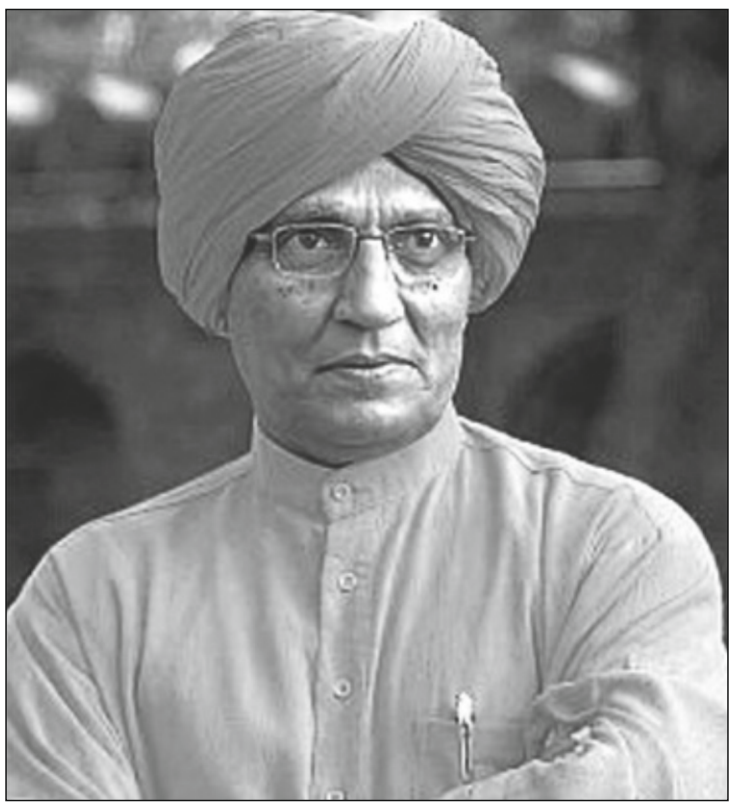

की चपेट में था तब सिख विरोधी दंगे हो रहे थे तो अपनी जान जोखिम में डालकर लोगों के बीच गए और सौहार्द का अभियान चलाया। सन् 1986 में हरिद्वार कुम्भ मेले के अवसर पर वेद प्रचार शिविर में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। सन् 1987 में दिल्ली से देवराला तक सती प्रथा विरोधी पद यात्रा की तथा सख्त कानून बनवाया। सन् 1992 में पुनः नशाबन्दी आन्दोलन तेज किया तथा बन्चारी (होडल) से चण्डीगढ़ तक 21 दिन की जन चेतना यात्रा का नेतृत्व किया। इसी प्रकार गाजियाबाद से हरिद्वार तक जन–चेतना यात्रा निकाली। राजस्थान के नाथद्वारा मंदिर में हरिजन प्रवेश का आन्दोलन चलाया जिसमें तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन का भी समर्थन मिला। पुरी के शंकराचार्य को सती प्रथा के नाम पर शास्त्रार्थ की चुनौती दी तथा दिल्ली से पुरा महादेव की पदयात्रा का नेतृत्व किया। हिन्दू सभा भवन दिल्ली में शराबबन्दी के लिए सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया। अध्यात्म जागरण मंच का गठन पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह, श्रीमती सोनिया गांधी, श्रीमती शीला दीक्षित आदि की उपस्थि में किया गया। ताल कटोरा स्टेडियम में शराबबन्दी महासम्मेलन के कार्यक्रम में श्री ज्ञानी जैल सिंह जी (पूर्व राष्ट्रपति), श्री मदन लाल खुराना, श्री टी. एन. शेसन, श्रीमती मेनका गांधी, श्री साहिब सिंह वर्मा आदि उपस्थित हुए तथा अपने विचार रखे। दिल्ली से हिसार की पदयात्रा निकाली जिसमें पांच हजार कार्यकर्ता साथ चले। स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश जी व अन्य प्रमुख साथी गिरफ्तार हुए उन्हें गुड़गांव जेल में तीन दिन तक बन्द रखा गया बाद में सर्वोच्च न्यायालय की ओर से उन्हें बाइज्जत रिहा किया गया। सन् 2002 में रोहतक के दयानन्द मठ में विशाल बेटी बचाओ सम्मेलन आयोजित किया गया। सन् 2004 में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान चुने गये। सन् 2005 में महर्षि दयानन्द जी की जन्मस्थली टंकारा से अमृतसर तक बेटी बचाओ अभियान की शुरुआत की गई जिसमें सभी मतों के नेता शामिल हुए। सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहते हुए जहाँ आन्दोलनों का नेतृत्व किया वहीं वेदों का प्रकाशन तथा सत्यार्थ प्रकाश की 50 हजार प्रतियाँ छपवाकर बंटवाई। सन् 2017 में विश्व के इतिहास में पहली बार विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली में किया गया जिसमें देश–विदेश के हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, बौद्ध व बहाई मत के विद्वानों एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने वेदों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सिक्खों व राम–रहीम के बीच समझौते की मध्यस्तता की। सरकार तथा नक्शलवादी नेताओं के बीच समझौते की मध्यस्तता की। सर्वधर्म संसद का गठन करके साम्प्रदायिक सौहार्द के माहौल को ठीक रखने का प्रयास किया। 'वसुधैव कुटुम्बकम' का गठन करके पूरी दुनिया में मानवता की लहर पैदा करने का महत्त्वपूर्ण शंखनाद किया। स्वामी जी ने विभिन्न जन–आन्दोलनों के नेताओं के साथ सहयोग किया जिनमें सुश्री मेधा पाटकर, श्री शंकर गुहा नियोगी, किसान नेता चौ. महेन्द्र सिंह टिकैत, श्री शरद जोशी, श्रीमती अरुणा राय, श्री निखिल डे, श्री हर्षमन्दर, श्री शमशेर सिंह बिष्ट, श्री जनकराज, श्री हजारी लाल जाटोलिया, श्री मामा बालेश्वर दयाल, श्री असगर अली इंजीनियर, डॉ. ब्रह्मदेव शर्मा, श्री बनवारी लाल शर्मा, श्री राजीव दीक्षित, श्री संदीप पाण्डेय, श्रीमती शबाना आजमी, श्री सुभाष भटनागर आदि के नाम उल्लेखनीय है। रोहतक के बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में नाड़ी वैद्य कायाकल्प संस्थान द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन का उद्घाटन किया। नक्सलियों द्वारा पकड़े गये 5 पुलिस जवानों को मुक्त कराकर सरकार को सौंपा। ऐसे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य स्वामी अग्निवेश जी के जीवन की उपलब्धियाँ रही हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वामी अग्निवेश जी

यू.एन.ओ. के समकालीन दासता विरोधी ट्रस्ट फण्ड के 9 वर्ष तक चेयरमैन रहे। विश्व विख्यात अवार्ड, निवानोपीस फाऊण्डेशन जापान की ज्यूरी के सदस्य रहे। अरब के मुखिया किंग अब्दुल्ला बिन अब्दुल्ला द्वारा साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए आस्ट्रिया में स्थापित कायसीड नामक संस्था के 9 में से एक डायरेक्टर स्वामी जी रहे। न्यूयॉर्क में लगभग 400 पादरियों के बीच यज्ञ करके उसकी व्याख्या की और उन पादरियों को यज्ञ के महत्त्व को समझाया। जॉन पोप पाल द्वितीय के समक्ष वेटिकन सिटी में जाना तथा महिलाओं के अधिकारों एवं उनकी भागीदारी पर सवाल उठाया। इसाईयों के सबसे बड़े पोप को धर्मान्तरण के विरुद्ध पत्र लिखना। सर्वधर्म सम्मेलन में प्राचीन सनातन धर्म की व्याख्या करना व हिन्दू मत की व्यवहारिक समीक्षा प्रस्तुत करना। सर्वधर्म सम्मेलन में मांसाहार पर सवाल उठाना तथा आस्ट्रिया देश की गृहमंत्री द्वारा उनके व्याख्यान से प्रभावित होकर मांसाहार का त्याग करके शाकाहार को अपनाना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। विश्व प्रसिद्ध आक्सफोर्ड व हारवर्ड विश्वविद्यालय में व्याख्यान। कनाडा की वर्ल्ड पार्लियामेंट ऑन रीलिजन की आम सभा में ऐतिहासिक भाषण दिया तथा वहाँ उपस्थित 10 हजार प्रतिनिधियों ने खड़े होकर स्वामी अग्निवेश जी का जोरदार तालियाँ बजाकर सम्मान किया। अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश के भारत आगमन पर धर्माचार्यों के साथ आहूत बैठक में 7 मिनट विश्व शांति पर भाषण देकर वेद एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भेंट करना ऐतिहासिक कार्य है। स्पेन के मैडरीड में अरब के राजा किंग अब्दुल्ला बिन अब्दुल्ला को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करके इतिहास रचा। तिब्बतियन नेता श्री दलाई लामा को उनके आन्दोलन में चीन के खिलाफ खड़े होकर दलाई लामा का साथ दिया। दक्षिण अफ्रीका के नेता नेल्सन मण्डेला से मिलकर मजदूरों के हकों की लड़ाई लड़ने का आह्वान किया। नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री बाबूराम भट्टाराई की शादी वैदिक रीति से करवाई। दुनिया के सैकड़ों देशों में स्वामी अग्निवेश जी मानवाधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से गये।

आज हम सबको संकल्प लेने की आवश्यकता है कि उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए संगठित प्रयास किये जायें। यदि हम उनके कार्यों को आगे बढ़ा पाये तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य समाज आरा, बिहार में स्मृति एवं प्रेरणा सभा का आयोजन

स्वामी अग्निवेश जी 20वीं सदी के महामानव थे

– रामानन्द प्रसाद

आर्य समाज आरा, बिहार में दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि एवं प्रेरणा सभा का आयोजन बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री रामानंद प्रसाद आर्य जी के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री रामानन्द आर्य जी ने कहा कि भारत के स्वातंत्रता संग्राम में गौरवशाली और शानदार किरदार निभाने वाले आर्य समाज आन्दोलन के क्षितिज पर सन् 1970 में एक जाज्वल्यमान सितारे का उदय हुआ था। जिसको स्वामी अग्निवेश के नाम से दुनिया में पहचाना गया। विश्व पटल पर स्वामी अग्निवेश को लाखों बंधुआ मजदूरों का मुक्तिदाता, नोबेल सम्मान से अलंकृत, बचपन बचाओ आन्दोलन के प्रणेता, हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पैरोकार, अन्धविश्वास एवं धार्मिक कट्टरता के मुखर विरोधी और समाजवादी सिद्धान्तों के प्रबल हिमायती के तौर पर जाना पहचाना जाता है। स्वामी अग्निवेश जी के बहुआयामी व्यक्तित्व में गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना, समाज सुधार की तीव्र ललक, समाजवादी राजनीतिज्ञ का आक्रोश एक साथ समाहित बना रहा। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी 20वीं शताब्दी के महामानव थे। स्वामी अग्निवेश जी अपने पूरे जीवनकाल में गरीब, मजदूर, शोषित, वंचित तथा अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के लिए हमेशा कार्य करते रहे। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने जिस उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की थी उन्हीं की भावनाओं के अनुरूप कार्य करते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने अपना पूरा जीवन लगा दिया। स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज एवं वेद के प्रचार–प्रसार के कार्य को देश ही नहीं दुनिया में फैलाया और आर्य समाज को नई पहचान दी। यदि सही मायने में कहा जाये तो अब तक कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो खुलकर समाज की बुराईयों के खिलाफ आवाज बुलन्द कर सके। स्वामी अग्निवेश जी हमेशा गलत एवं अवैज्ञानिक बातों का विरोध किया। सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहने से नहीं चूके। स्वामी अग्निवेश जी एक क्रांतिकारी आर्य संन्यासी थे, उनके कार्यों एवं तेज को देखकर कुछ तथाकथित आर्य समाजी तथा पाखण्डी हमेशा जलते रहे और उन पर कई बार कातिलाना हमले भी करवाते रहे। जिस तरह से स्वामी दयानन्द सरस्वती पर कई बार कातिलाना हमले हुए और अन्तत्तोगत्वा पाखण्डियों ने अपने मकसद में कामयाब होते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को जहर दिलवाया और उसके बाद उनकी लगभग 6–7 महीने के बाद मृत्यु हो गई ठीक उसी प्रकार स्वामी अग्निवेश जी के साथ भी अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के पोषकों ने किया उन पर झारखण्ड के पाकुड़ में प्राणघातक हमला करवाकर उन्हें घायल कर दिया जिसके बाद स्वामी जी लगभग एक वर्ष तक जीवन और मृत्यु से संघर्ष करते रहे और अन्तत्तोगत्वा 11 सितम्बर, 2020 को पंचतत्त्व में विलीन हो गये। आज उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर इस प्रेरणासभा के अवसर पर हम यह बताना चाहते हैं कि स्वामी अग्निवेश जी अवश्य चले गये परन्तु उनके विचारों एवं कार्यों को कोई नहीं मिटा सकता। हम सबको उनके कार्यों एवं विचारों से प्रेरणा लेकर आर्य समाज के कार्य एवं समाज के दबे–कुचले व्यक्तियों के लिए कार्य करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर अपने–अपने विचार रखने वालों में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री अवध बिहारी मेहता–प्रधान, आर्य समाज आरा, श्री अरुण आर्य ब्यापुर आर्य समाज, श्री मनोहर मानव–गांधीवादी नेता, श्री प्रमोद शास्त्री, श्री सत्यदेव कुमार आर्य, श्री विष्णु शास्त्री, श्री प्रकाश रंजन आदि रहे। इस प्रेरणा सभा में आर्य समाज के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता तथा समाज के सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गरीबो, पिछडो के मसीहा, सामाजिक क्रांति के पुरोधा, क्रांतिकारी आर्य संन्यासी

पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य वीरदल जोधपुर द्वारा स्मृति एवं प्रेरणा सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि दी गई

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर आर्य वीरदल, जोधपुर के पदाधिकारियों ने स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि पर उन्हें याद करते हुए उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

कार्यक्रम के मुख्य वक़्ता श्री नारायण सिंह जी आर्य ने स्वामी जी के साथ किये गए कार्यों को बताते हुए कहा कि "एक तन पर सोने का तार चढ़ा, एक तन पर सूत नही–इसीलिए बगावत करता हूँ ये न्याय मुझे स्वीकार नहीं" बात को अपनाकर अज्ञान, अन्याय अभाव के खिलाफ संघर्ष करने वाले व्यक्तित्व थे। स्वामी अग्निवेश जी ने सती प्रथा आंदोलन, कन्या भ्रूण हत्या, बंधुआ मजदूर आंदोलन, अंग्रेजी हटाओ आंदोलन, अछूतोद्धार सहित अनेक कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन कर समाज में मानव–मानव एक समान का संदेश देने वाले क्रांतिकारी सन्यासी थे।

इस अवसर सर्वश्री जितेंद्र सिंह जी, चांदमल जी आर्य, भंवरलाल जी हटवाल, विनोद जी गहलोत, विक्रम सिंह जी, कपिल जी आर्य सहित अन्य आर्यजनों ने श्रद्धांजलि दी।

श्रद्धांजलि सभा का आयोजन यज्ञ से किया गया। यज्ञ का संचपालन श्री मदनगोपाल जी आर्य ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लक्ष्मण सिंह जी आर्य ने किया।

इस अवसर पर सर्वश्री गजेसिंह जी भाटी, अमृतलाल जी आर्य, विजय जी शर्मा, विनोद जी गहलोत, वीरेंद्र जी मेहता, शिवप्रकाश जी सोनी, विकास जी आर्य, गणपत सिंह जी आर्य, अशोक जी आर्य, जतनसिंह जी भाटी, रोशन जी आर्य, कुलदीप जी सिंह, अभिषेक जी, कपिल जी आर्य, हड़मानदास जी, अनिल जी आर्य, सोनपाल जी आर्य, तरुण जी गहलोत, मुकुल जी आर्य, राम जी गहलोत सहित आर्य वीर उपस्थित रहे। अन्त में आर्य वीर दल जोधपुर के अध्यक्ष श्री हरिसिंह जी आर्य ने संस्मरण सुनाकर सभी को धन्यवाद दिया।

पृष्ठ 1 का शेष

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि समारोह पूर्वक सम्पन्न

स्वामी जी वेद आधारित जीवन मूल्यों समानता, सत्य, प्रेम, न्याय, सहनशीलता आदि की पुनर्स्थापना के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहे। स्वामी अग्निवेश जी धर्म, अध्यात्म, मानवता, समाज व राष्ट्र की अस्मिता और उसकी गरिमा को बचाने तथा बढ़ाने में हमेशा मुखर रहे।

स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक व साहसी संन्यासी थे। वो सत्य के लिए लड़ते थे। इसके लिए वो बड़ी से बड़ी ताकत से टकराते हुये नहीं घबराते थे। स्वामी जी के ऊपर कई बार कातिलाना हमले हुये लेकिन वे कभी पीछे नही हटे। स्वामी अग्निवेश जी द्वारा सऊदी अरब के राजा को सत्यार्थ प्रकाश देना उनके साहस का एक अप्रतिम उदाहरण है। इसी तरह जब अमेरिकी राष्ट्रपति श्री जार्ज बुश भारत आये थे तो उन्होंने भारतीय धर्मगुरुओं के साथ एक गोष्ठी की जिसमें स्वामी अग्निवेश जी भी थे। सभी धर्माचार्यों को 2 मिनट का समय दिया गया था लेकिन स्वामी अग्निवेश जी ने 7 मिनट तक अपने विचारों और व्यवहार से राष्ट्रपति बुश को गहरे तक प्रभावित किया तथा चारों वेदों का एक सैट उन्हें प्रदान किया। स्वामी अग्निवेश जी के विचारों से प्रभावित होकर जार्ज बुश ने अपने राजदूत को 7, जन्तर मन्तर रोड कार्यालय में भेजा तथा उन्होंने विशेष धन्यवाद पत्र स्वामी अग्निवेश जी को प्रदान किया।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी सरीखे महापुरुष को सच्ची श्रद्धांजलि का स्वरूप यही हो सकता है कि हम अपने समय की समस्याओं और अन्य ज्वलन्त मुद्दों का समाधान उसी तन्मयता और समर्पित भावना से करें जिसका उदाहरण स्वामी अग्निवेश जी ने अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में प्रस्तुत किया है।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी साम्प्रदायिकता के विरोधी तथा शांति के पक्षधर थे। सभी धर्मों के बीच समन्वय कर विश्व स्तर पर शांति स्थापित करने और विश्व सरकार बनाने के हिमायती थे। इसीलिए उन्होंने हमेशा वसुधैव कुटुम्बकम् की आवाज को बुलन्द करते रहे। स्वामी अग्निवेश जी के विचारों की आवश्यकता को आज प्रबुद्ध लोग महसूस करते हैं।

सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील जी महाराज ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी हम सबके प्रेरणा स्रोत हैं, हमारा उनसे 2005 में सम्पर्क हुआ और तब से हम स्वामी अग्निवेश जी के विचारों के कायल हो गये और उनके कंधे से कंधा मिलाकर समाजोपयोगी कार्यों में लगे हुए हैं। गोस्वामी जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने सर्वधर्म संसद के माध्यम से सभी धर्म के संतों को एक मंच पर आकर काम करने के लिए प्रेरित किया और समाज में फैली विकृतियों को खत्म करने के लिए कार्य करने को कहा। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं परन्तु उनके विचार एवं प्रेरणा हमारे दिलों में है और हम सबको उनके कार्यों एवं विचारों से प्रेरणा लेकर आगे कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए।

स्वामी अग्निवेश जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी ने बताया कि स्वामी अग्निवेश जी का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था और उन्होंने अपने घर से ही पाखण्ड एवं अन्धविश्वास की खिलाफत शुरू की और कहा कि यदि इसी तरह से पाखण्ड पूरे देश और समाज में है तो हमें इस पर कार्य करना होगा और उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज को समर्पित कर दिया। हम सबको स्वामी अग्निवेश जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे कार्य करने की आवश्यकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने स्वामी अग्निवेश जी के संस्मरणों को सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी एक निडर और प्रतिभावान संन्यासी थे। उन्होंने जिस समय सतीप्रथा के विरोध में दिल्ली से देवराला तक पदयात्रा निकालकर इस भयंकर कुरीति को समाप्त करवाकर कानून बनवाया वह अपने आपमें महत्त्वपूर्ण कार्य था। आज सती प्रथा तो क्या उसका कोई नाम भी नहीं जानता। स्वामी अग्निवेश जी हमेशा से ज्वलन्त मुद्दों को लेकर सामाजिक आन्दोलन करके जन–जागृति फैलाने में लगे रहते थे।

इस अवसर पर वर्ल्ड पीस आर्गेनाइजेशन के महामंत्री मौलाना एजाज शाहीन कासमी जी ने स्वामी जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज हमें स्वामी जी की कमी महसूस हो रही है। स्वामी जी कोई साधारण मानव नहीं थे, वे सम्पूर्ण जगत के लिए एक अप्रतिम उदाहरण थे। वे सभी धर्मों के धर्माचार्यों से शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार रहते थे और मानवता के कल्याण की बात किया करते थे। वे सभी धर्माचार्यों को कहते थे कि आप सब धर्म के सही अर्थ को पहचानें और धर्मभीरू जनता को सही मार्ग दिखाने का कार्य करें। धर्म के नाम पर जो अनर्गल, अवैज्ञानिक बातें हैं उन्हें दरकिनार करके संसार के उपकार के बारे में व्यापक विचार करें। जिससे सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित हो सके। स्वामी जी का सम्मान सभी धर्म के लोग करते थे।

इनके अतिरिक्त गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी के सरदार परमजीत सिंह चण्डोक, जैन मुनि श्री विवेक मुनि, श्री हवा सिंह हुड्डा, श्री मनु सिंह, श्री सलीम इंजीनियर तथा अन्य लोगों ने अपने–अपने विचार रखे। इस अवसर पर स्वामी सोम्यानन्द, बेटी अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या, श्रीमती सुनीता आर्या, प्रीति आर्या, डॉ. मुमुक्षु आर्य, राजस्थान से श्री भंवर लाल आर्य, श्री बलजीत सिंह आदित्य दिल्ली, श्री ऋषिराज आर्य, श्री उत्तम आर्य, श्री जश्न आर्य, कविता, श्रीमती अलका पुरी, श्री आदित्य रण सिंह आर्य, श्री बाबूलाल आर्य, श्री मुकेन्द्र कुमार, श्री राम निवास नारनौल, श्री मायाराम फरीदाबाद, श्री रमेश आर्य, श्री आर्य बिजेन्द्र सिंह, श्री ऋषिपाल आर्य, श्री मृत्युंजय कुमार, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, श्री भानू प्रताप सिंह, श्री रामसरण, श्री काशीराम, श्री मुक्ति तिर्की, स्वामी अग्नयानन्दी, श्री कमल सिंह, श्री ओमेन्द्र आर्य, श्री मनोज कुमार सिंह, श्रीमती ऊषा उपाध्याय सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति तथा सार्वदेशिक सभा एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पूरे कार्यक्रम का संचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया। इस अवसर पर स्वामी अग्निवेश जी द्वारा मुक्त कराये गये पाँच बंधुआ मजदूरों को सम्मानित भी किया गया।

गोस्वामी सुशील जी

स्वामी आदित्यवेश जी

श्री परमजीत सिंह चण्डोक

श्री बिरजानन्द एडवोकेट

श्री हवा सिंह हुड्डा

श्री विवेक मुनि

मौलाना शाहीन कासमी

श्री सलीम इंजीनियर

Swami Agnivesh liberated bonded labourers as well as slaves of religion

- Valson Thampu

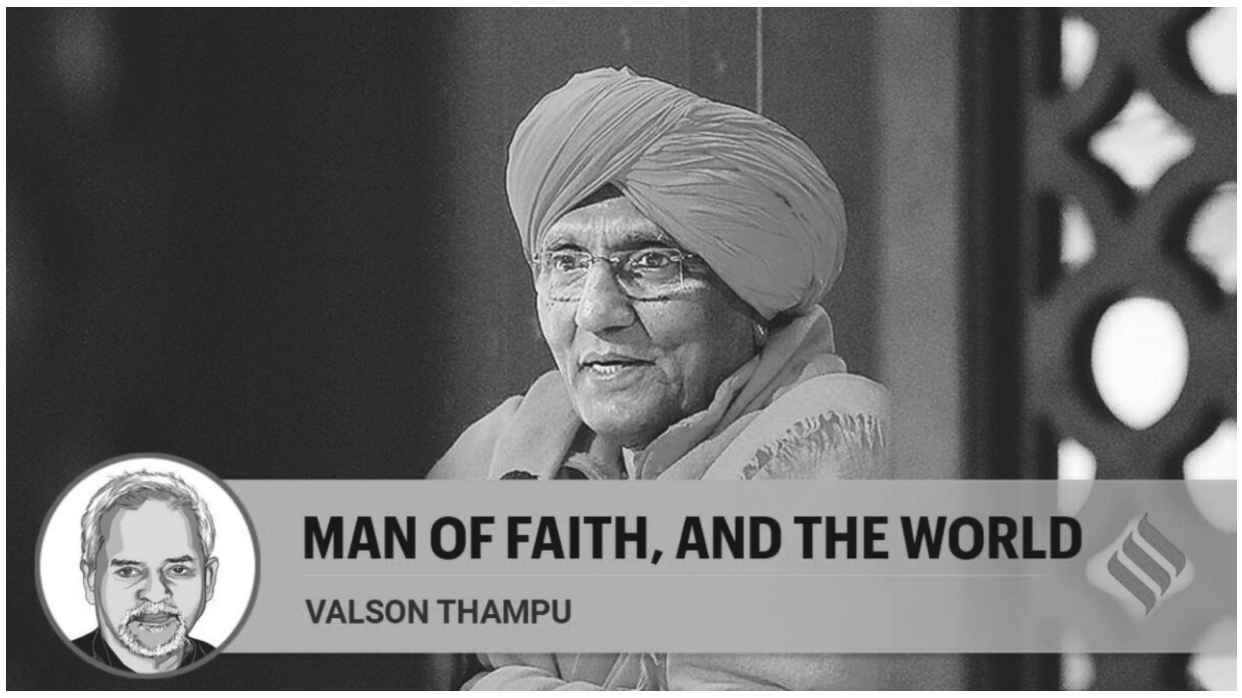

This memory goes back to 1996. The Anglican bishop in Jerusalem was addressing a packed audience in New Delhi. He made an emotional appeal to Christian powers of the world to make Jerusalem the Christian capital of the world by annexing that city. His arguments elicited a thunderous ovation from the audience, except from two people, who had, till then, never met each other — Swami Agnivesh and I. Both of us argued, much to the discomfiture of the event's organisers and the speaker, that birth is an accident and places of birth, therefore, should not be ascribed exaggerated importance. Furthermore, if a birth has universal significance, such as the birth of Jesus, playing up the local and the regional contradicts the universality of the event. We in India were not unaware of the dangerous implications of doing otherwise. We referred, independently of each other, to the Ayodhya movement.

Later that evening, Swami Agnivesh came home. That meeting resulted in a lifelong inter-religious partnership, which proved to be a life-transforming experience for me. I remember and cherish Swami Agnivesh as an elder brother, who nurtured my potential and brought out the best in me over the next two decades and more. He was unreservedly appreciative of what I stood for, to an extent I have never experienced from anyone in the Christian community.

The greatest service Swamiji did to me was to open my eyes to the pretensions and hypocrisies of all religious establishments, including my own. I was a sort of religious bigot till I met him. He taught me that religious bigotry was the deepest form of self-invited slavery. Hand on heart, I testify to the profundity of that truth.

It is well-known that Swamiji liberated and rehabilitated tens and thousands of bonded labourers. What is less known is he also liberated slaves of religion, such as I was. Till I met him, I thought I had a Christian mission to the rest of the world. Since then, I realised that I have a divine mission, first, to my own community — to liberate it from its wilful blindness and manifold prejudices against people of other faiths and people of no faith. He taught me the importance of speaking the truth to one's own religious community, which is a costly spiritual mission. In comparison, attacking other faiths or decoying them into one's community as converts is cheap and dishonest.

My enduring sadness is that the true significance of Swami Agnivesh remains unrecognised. He believed that religion without spirituality is a snare and a liability. While God is the effulgent centre of spirituality, mostly mediocre men manipulate organised religions to subserve vested interests. Faithfulness to God liberates, loyalty to men enslaves. Swami Agnivesh would have nothing to do with any tradition of religiosity that degrades human beings into bonded labourers of humanity — degrading communalism or political buccaneering.

A couple of decades ago, I happened to address the national conference of the Episcopal Church of the United States in Chicago. Later, while I was interacting with members of the audience, a middle-aged lady asked me if I knew Swami Agnivesh. When I told her I did, and that we were in an inter-religious partnership, she bent down in order to touch my feet. I remembered Swamiji, who never allowed anyone to express respect towards him by abasing themselves. I stuck to his example. I cite this instance to point out that the respect that Swamiji commanded in other countries exceeded what was accorded to him at home.

Swamiji was truly a citizen of the world. This meant that he did not allow narrow-minded jingoism to blind him towards his larger responsibilities to humankind. The vision of vasudhaiva kutumbakam, the tenet that the world is one family, was what inspired him most. Towards the fag end of his life, he launched a movement under that name, but could not give it the sort of life and organisational base it needed to become an impactful people's movement.

Swamiji was convinced that the perpetuation of human slavery under religion was achieved by divorcing religion from reason as well as by making people indifferent to the duty to make justice prevail in the world. As a result, religious bigotry makes people defend the indefensible when it is perpetrated by priestly classes of diverse kinds. People are willing to corrupt their own souls in order to shield the corrupt in their religions. Religiosity of this kind militates against the dignity and integrity of humankind.

Religious reform remains the hardest goal to achieve. It is also the riskiest. Swamiji took me one day to visit the place where Maharshi Dayanand Saraswati was poisoned to death, as a reward for his enlightened views. I am richer for delving into the teachings of Dayanand. The copy of Satyarth Prakash Swamiji presented to me remains one of my cherished possessions. He endeavoured, to his last breath, to remain true to the teachings of the founder of the Arya Samaj. He was saddened by the compromise a section of the Samaj made with the proponents of religious obscurantism.

The very last thing Swamiji requested me to do, on the day of his hospitalisation for possible liver transplant surgery, was to write out the views we shared on religion. I launched into that task at once. I managed to finish the first draft of the book before Swamiji lost consciousness. I am glad to say that the book, titled Beyond Religion: Imaging A New Humanity, is now going into print.

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

बंधुआ मुक्ति मोर्चा अल्मोड़ा व उत्तराखण्ड लोकवाहिनी के संयुक्त तत्वावधान में स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्य तिथि को प्रेरणा सभा के रूप में मनाया गया

अल्मोड़ा 15 सितम्बर 2021, प्रसिद्ध जन आन्दोलनकारी, बंधुवा मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्वामी अग्निवेश की स्मृति में बंधुवा मुक्ति मोर्चा अल्मोड़ा व उत्तराखण्ड लोकवाहिनी के संयुक्त तत्वाधान मे प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए श्री दयाकृष्ण काण्डपाल ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने सती प्रथा, बंधुआ मुक्ति आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, कन्या भ्रूण हत्या को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। जिस पर न्यायालय व तत्कालीन सरकारों ने संज्ञान लिया व कानून बनाये।

इस अवसर पर श्री पूरन चन्द्र तिवारी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने उत्तराखण्ड के जन आन्दोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी जी ने नशा नहीं, रोजगार आन्दोलन, उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन में उत्तराखण्ड की जनपक्षधरता की पैरवी की। एडवोकेट श्री जगत रौतेला ने कहा कि स्वामी अग्निवेश मानवाधिकारों के बड़े पैरोकार थे। सरकारें उनके आन्दोलनकारी तेवरों से परेशान रहती थीं। स्वामी अग्निवेश जी पर सार्वजनिक रूप से सत्ताधारी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने हमले किये। जिसके बाद वे सभल नहीं पाये।

श्री अजयमित्र सिंह बिष्ट ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी की असमय मृत्यु समाज की बडी क्षति है। आज भारत में जनमुद्दों पर बहस शिथिल हो गई है। श्री अजय सिंह मेहता ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी हमेशा युवाओं के लिए ऊर्जा का स्रोत रहे। पत्रकार श्री दिनेश भट्ट ने कहा कि स्वामी जी ने लैगिंग भेदभाव के खिलाफ हमेशा आवाज उठाई। इनके अतिरिक्त श्री कुन्दन रावत व श्री कुणाल तिवारी ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये। बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री रेवती बिष्ट ने कहा कि स्वामी जी का सारा जीवन गरीबों की सेवा में व्यतीत हुआ, वे उत्तराखण्ड के समुचित विकास के लिए देश भर में आवाज उठाते रहते थे। सभा का संचालन श्री दयाकृष्ण काण्डपाल ने किया। अंत में 2 मिनट का मौन रख स्वामी जी को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई ।

वार्षिकोत्सव एवं 21वे दुर्लभ शादर यज्ञ का निमन्त्रण

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्य। भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

प्रिय बन्धुओं यह इस दुर्लभ यज्ञ का चौथा व अन्तिम निमन्त्रण पत्र आप लोगों की सेवा में समर्पित कर रहा हूँ। यूं तो आप सभी लोग याजक है। अपने घरों, अपने परिवारों में नित्य अग्निहोत्र करने वाले है। जो कि बहुत अच्छी बात है। अपने परिवारों में नित्य यज्ञ करते रहें, महान कल्याण होगा। इसके बाद भी मैं बार–बार आप लोगों को इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित कर रहा हूँ। कारण जहां बड़े–बड़े यज्ञ हो रहे हों वहां भी कभी कभार जाना चाहिए। उनमें भी अपनी आहुतियां समर्पित करनी चाहिए उसका अपना विशेष महत्त्व है।

वेद्याः वेदिः समाप्यते, वर्हिषा वर्हिरिन्द्रियम्,
यूपेन यूपआप्यते प्रणीतोऽग्निः अग्निना।

यह वेद मन्त्र भी इसी ओर इंगित कर रहा है कि समूह में शक्ति है, अर्चना भी करनी हो तो वेद भगवान कहते है– सहस्त्रंसाकमर्चत सहस्त्रों की संख्या में अर्चना करो। इससे सफलता अवश्यम्भावी हो जाती है। उदाहरणों के साथ वेद भगवान कहते हैं– हे मनुष्यो जैसे वेद्याः–विद्ववान लोग यज्ञ से सम्बन्धित पदार्थो को लेकर वेदिः समाप्यते यज्ञवेद को प्राप्त करते हैं। यानि कि यज्ञशाला में जाकर सबके कल्याण के लिए श्रेष्ठतमम् यज्ञ कर्म को करके महान कल्याण को प्राप्त करते हैं। जैसे मनुष्य अपने वर्हिषा– महान पुरूषार्थ से वर्हिरिन्द्रियम महान पुरूषार्थ जन्य – धन को अर्थ रूप पुरूषार्थ को प्राप्त कर लेता है। जैसे यूपेन दृढ इच्छा शाक्ति वाले पृथग् पृथग् व्यक्ति समूह रूप में यूपः किसी एक दृढ शंकल्प के परिणाम को दृढ शंकल्प जन्य सफलता को प्राप्त कर लेते हैं। जैसे अग्निना – बिजली आदि अग्नियों से प्रणीत– सम्मिलित अग्निः सबके पथ प्रदर्शक सभी का कल्याण करने वाला आविस्कार विशेष सामने आ जाता है। ठीक वैसे ही तुम भी इकठे होकर साधनों से साधन मिलाकर सुख विशेष को प्राप्त करो।

प्रिय बन्धुओं – सुख व शान्ति का मूल कारण यह यज्ञ ही है। अपने घरो में, अपने अपने क्षेत्रों में यज्ञ करने वाले याजक जब समूह रूप में इस यज्ञ को विशाल रूप में करते है तो विशेष लाभ होता है, सत्वर लाभ होता है।

और– पूज्य चरणों के द्वारा आरम्भ किया गया यह यज्ञ बड़ा भी है, लम्बे समय तक चलने वाला है। अतः दुर्लभ है, कहीं अन्यत्र होता हुआ नहीं देखा गया है। महान कल्याणकारी इस दुर्लभ शादर यज्ञ का फल हम सभी को, आप सभी को प्राप्त हो इसी कामना से इस यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए अपनी आहुतियां समर्पित करने के लिए आप लोगों को बार–बार आमन्त्रित करता हूं। अतः आओ हम सब मिलकर इस महान यज्ञ अभियान को सम्पन्न करें। इस यज्ञ में देवजन, पितृजन, ऋषिजन, पूत व पवित्र दिवंगत आत्माएँ अपने–अपने भाग को ग्रहण करने के लिए उपस्थित होते है। उन सबको जब समूह रूप में याजक लोग श्रद्धा से, भूरि रूप से आहुतियां समर्पित करते हैं, और यज्ञ के अन्त में गद–गद होकर, भावविभोर होकर निर्मल हृदयों से याजक जब उन देवों से प्रार्थना करते हैं। भूरिशः भूरि में देहि हे देवों आप सर्वविध परिपूर्ण हो। हमारी समस्त मंगल कामनाओं को भी पूर्ण कर दो। आप थोड़ा देने वाले नही हो। आप जब देते हो तो बहुत देते हो। अतः हमारी झोलियों को भी भूरि रूप से सुख सौभाग्यों से भर दो और वह मनोवांच्छित फल आशीर्वादों के रूप में याजको को प्राप्त होते हैं। अतः एक बार पुनः निवेदन कर रहा हूँ, साग्रह निवेदन कर रहा हूं आप लोग इस यज्ञ में आवें अवश्य आवें। अथवा इसकी सम्पन्नता के लिए अपना–अपना अशंदान, सहयोग राशियां अवश्य ही भेजें। ईश्वर सबका कल्याण करें। धन्यवाद

सहयोग राशियाँ निम्नलिखित बैंक खाते में भेजें :–
बैंक – स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
नाम – दयानन्द मठ चम्बा
खाता न0–11149833806
IFSC-SBIN0000626

यज्ञ में आने वाले ऋषिजन

जिन्होंने अपना आशीर्वाद देना कर्तव्य समझा

1. **परम श्रद्धेय स्वामी आर्यवेश जी**
   प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
2. **पूज्य स्वामी आदित्यवेश जी,** – संचालक मिशन आर्यवर्त
   प्रबन्धक, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली हरियाणा
3. **पूज्य स्वामी धर्ममुनी जी,** आर्य समाज भिवानी हरियाणा

वे स्वर सम्राट

जिन्होंने –इस यज्ञ को अपने संगीत के झंकारी से झंकृत करने का उत्तरदायित्व जिन स्वर सम्राटी में स्वीकार किया है वे हैं श्री राजेश अमर प्रेमी जी जालन्धर तथा श्री संदीप आर्य जी पानीपत

इनके मनोरथ में सहायक स्थानीय मधुर गायक

1. श्री मनोज कुमार जी शास्त्री, 2. श्री सुनील कुमार जी शास्त्री, 3. श्री संजय कुमार जी शास्त्री, 4. श्री आचार्य राजकुमार जी, 5. श्रीमती सरस्वती देवी जी, 6. श्रीमती नीतू आर्या जी, 7. सुश्री डिम्पल मैडम जी महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय चम्बा।

वेदपाठी

1. श्री हरिलाल जी शास्त्री जी, 2. श्री लोभी राम जी शास्त्री तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र व छात्राएं।

आमन्त्रित	स्वागतकर्ता	प्रबन्धककर्ता
आप सभी देव व देवियां	हम सभी आश्रमवासी दयानन्द मठ प्रबन्धक समिति के सदस्य	स्वामी सुमेधानन्द शिष्यमंडल चम्बा

तथा महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के सभी सदस्यगण व छात्र

कार्यक्रम समय सारिणी

6 अक्टूबर, 2021

प्रातः 7 से 8.30 तक यज्ञ, 8.30 से 9.30 भजन, 9.30 से 10 बजे तक उपदेश

7 अक्टूबर, 2021

प्रातः 6:30 से यज्ञ प्रारभ जो 8 अक्टूबर प्रातः 8 बजे तक चलेगा, 8 से 9 बजे तक भजन 9 से 9.45 तक उपदेश 9:45 से पूर्णाहुती की प्रकृया। 10 बजे शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन। 11 बजे ऋषि प्रसाद

– आचार्य महावीर सिंह
दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०),
सम्पर्क सूत्र –94180–12871

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 12 सितम्बर, 2021 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरि.) में प्रेरणा सभा का आयोजन

स्वामी अग्निवेश जी का जीवन सत्य की स्थापना के लिए संघर्ष में बीता

– स्वामी आर्यवेश

समाज सुधार के कार्यों के लिए समर्पित थे स्वामी अग्निवेश

– प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी अग्निवेश जी व्यवस्था परिवर्तन में विश्वास रखते थे

– स्वामी आदित्यवेश

वसुधैव कुटुम्बकम् एवं शांति के पक्षधर थे स्वामी अग्निवेश

– बहन पूनम आर्या

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी, बंधुआ मजदूरों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले, दबे कुचले लोगों की आवाज, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 12 सितम्बर, 2021 को स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में यज्ञ के साथ प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया जो भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रेरणा सभा के अध्यक्ष हैदराबाद से पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान व सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी ने भरी जवानी में अपनी प्रोफेसर की नौकरी को ठोकर मारकर स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्यों के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया और उन्होंने अपने विचारों एवं कार्यों से आर्य समाज की पहचान विश्व स्तर पर बनाई। स्वामी अग्निवेश जी विश्व सरकार की स्थापना की बात किया करते थे उनकी सोच एवं विचारधारा व्यापक थी। विश्व के अनेक देशों में उनकी पहचान थी और उन्होंने बड़े–बड़े राष्ट्राध्यक्षों को आर्य समाज की विचारधारा से अवगत कराया और विश्व में आर्य समाज की पहचान को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

इस अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश ने स्वामी अग्निवेश जी के साथ अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी व्यवस्था परिवर्तन में विश्वास करते थे जिससे समाज के ताने–बाने को बदलकर सबके कल्याण के लिए कार्य किया जा सके। आज हमें उनके विचारों से प्रेरणा लेकर आगे कार्य करने की जरूरत है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी अग्निवेश के संस्मरणों को संक्षिप्त में बताते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी अपनी पहचान गरीबों, मजदूरों के उद्धार तथा कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज को बुलन्द करके बनाई। उन्होंने भारत ही नहीं अपितु कई अन्य देशों में अपने विचारों से लोगों को प्रभावित किया। स्वामी अग्निवेश जी ने सतीप्रथा के खिलाफ आन्दोलन करके कानून बनवाये, कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ यात्रा निकालकर पूरे देश में जन–जागृति फैलाने का कार्य किया। स्वामी अग्निवेश जी विश्व के कई संगठनों में अध्यक्ष एवं सदस्य रहते हुए मानवता के लिए अनेक उपयोगी कार्य किये। स्वामी अग्निवेश जी ने अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किये हैं जिनसे आज हम सभी को प्रेरणा लेने की जरूरत है। वे सदैव गरीब, मजदूर, एवं बेसहारा लोगों के लिए संघर्ष करते रहे। स्वामी जी का कार्यक्षेत्र केवल भारत ही नहीं था, अपितु पूरा विश्व उनके लिए एक परिवार की तरह था और वे सभी मनुष्यों तथा जीव–जन्तुओं की रक्षा की बात बड़े जोर–शोर से उठाते थे। स्वामी अग्निवेश जी का जन्म 21 सितम्बर को आता है और उसी दिन विश्व शांति दिवस भी मनाया जाता है, इसलिए स्वामी अग्निवेश जी अपने जन्मदिन को विश्व शांति दिवस के रूप में हमेशा मनाते थे और लोगों को प्रेरित करते थे कि आज सभी लोग संकल्प लें कि संसार में किसी भी पशु–पक्षी की हत्या नहीं करेंगे, हिंसा नहीं करेंगे। सम्पूर्ण मानव जाति एवं जीव–जन्तुओं की रक्षा का संकल्प दिलवाया करते थे। आज हम सब उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए हैं। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने में अपना तन–मन–धन समर्पित करके सभी के कल्याण के लिए कार्य करें।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी साम्प्रदायिकता के विरोधी तथा शांति के पक्षधर थे। सभी धर्मों के बीच समन्वय कर विश्व स्तर पर शांति स्थापित करने और विश्व सरकार बनाने के हिमायती थे। इसीलिए उन्होंने हमेशा वसुधैव कुटुम्बकम की आवाज को बुलन्द करते रहे।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि बेटी बचाओ अभियान को आगे बढ़ाने में स्वामी अग्निवेश जी ने हमें साहस प्रदान किया। नशाबंदी परिषद हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि हरियाणा के शराबबंदी आंदोलन में स्वामी अग्निवेश जी का बहुत बड़ा योगदान है। वे आंदोलन पुरुष थे। इनके अतिरिक्त सर्वश्री जगबीर शास्त्री, सतवीर फरमाना, रामेंद्र आर्य, महम चौबीसी से बलवंत सिसर तथा जागे राम आर्य ने अपने विचार रखे। स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में 11 सितंबर से 21 सितंबर तक देश व दुनिया में प्रेरणा सभा एवं विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।